HANS SHODH SUDHA, Vol. 1, Issue 2, (2020), pp. 27-31

कोरोना योद्धाओं के लिए भगवद्गीता का संदेश

दिनेश कुमार, दिव्यान्शु सिंह

Email id of Corresponding author: drdineshbob@gmail.com

सार

कोरोना के विरुद्ध युद्ध में कोरोना योद्धा अर्जुन की भांति है। उसे ज्ञात ही नहीं है कि इस युद्ध में वह जिससे मिल रहा है वह कोविड के संक्रमण से संक्रमित है अथवा नहीं, वह जहाँ जा रहा है, वहां कोरोना वायरस है या नहीं, वह जिन वस्तुओं का कोरोना के विरुद्ध युद्ध मे हथियार के रूप मे इस्तेमाल कर रहा है, कहीं वाइरस उसी मे तो नहीं छिपा है। उसे यह मालूम ही नहीं होता कि आखिर दुश्मन छिपा कहाँ है? उसे यह भी नहीं पता होता कि इस युद्ध का अंतिम निर्णय क्या होगा? क्या उसके द्वारा प्रयुक्त शस्त्र (दवाइयाँ) कारगर होगा या नहीं और होगा तो किस सीमा तक? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिनका जवाब कोरोना योद्धाओं के पास नहीं होता है। तो क्या ऐसी स्थिति में कोरोना योद्धा, युद्ध का मैदान छोडकर भाग जाएं या अदृश्य दुश्मन के विरुद्ध डटे रहें। उसका युद्ध महाभारत के युद्ध की भांति ही है जो कि अपनों के बीच परंतु धर्म के लिए था। महाभारत का युद्ध यह निर्णय करेगा कि धर्म जीतेगा या हारेगा किन्तु कुरुक्षेत्र की रण भूमि में पहुँचने के बाद अर्जुन ने इच्छा जाहिर की थी कि वह यह देखना चाहता हैं कि उसे किससे युद्ध करना है? अतः उसके सारथी भगवान श्री कृष्ण उसका रथ दोनों सेनाओं के मध्य में ले जाते हैं। जब अर्जुन ने देखा कि उसे अपने पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य एवं कृपाचार्य तथा अपने कौरव भाइयों से युद्ध करना है तो उसे गंभीर संकट का अनुभव महसूस होता है और विश्व का सबसे बड़ा धनुर्धर- अर्जुन अपना गाँडीव (धनुष) रख देता है।

कोरोना के विरुद्ध इस युद्ध में कोरोना योद्धा विशेष रूप से स्वास्थ्य कर्मी भी अर्जुन की तरह ही दुविधा में हैं कि:-

- इस युद्ध का क्या परिणाम होगा? क्या वे इस युद्ध मे अंततः विजयी हो पायेंगे?;
- अपने कर्तव्य को चुनें या अपनी और अपने परिवार की रक्षा को चुनें ठीक उसी तरह जिस तरह अर्जुन युद्ध भूमि में अपनों को देखकर विचलित हो गया था (*सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति, वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते*। 1:29)[1];
- व्यक्तिगत सुरक्षा पर ध्यान दें या अपने पेशेवर धर्म को निभाएं ठीक उसी तरह से जैसे कि अर्जुन दुविधा में था कि अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए अपने राज्य को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करे या अपने और अपनों की जान बचाने के लिए अपने क्षत्रिय धर्म का त्याग कर दे;
- समस्या केवल नैतिक संघर्ष तक ही सीमित नहीं है बल्कि स्व-अस्तित्व बनाए रखते हुए लक्ष्य प्राप्ति के लिए चुने हुए मार्ग की भी स्थिति ठीक उसी प्रकार है जैसे कि अर्जुन का मानना था कि उसे अपने ही लोगों को मार कर क्या मिलेगा? अपनों को मारने से तो उसे नरक ही मिलेगा। अतः वह भगवान श्री कृष्ण से कहता है कि अपनों को मार कर राज पाने से तो अच्छा है कि वह स्वयं ही मर जाए, जिसे भगवद्गीता में इस प्रकार उद्धरथ किया गया है:

उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ।।(1:44)[2]

इस पर भगवान श्री कृष्ण, जो कि अर्जुन के सारथी भी थे, ने अर्जुन को जीवन जीने की कला सिखायी। धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र में भगवद्गीता के माध्यम से श्री कृष्ण ने जीवन जीने का जो मार्ग दिखाया वह आज भी कठिन से कठिन परिस्थितियों में उतना

ही प्रासंगिक है जितना कि 5000 वर्ष पूर्व था। उन्होंने अर्जुन को ज्ञान दिया कि योद्धा होने के नाते उसका एकमात्र धर्म युद्ध करना है न कि इस बात से चिन्तित होना कि वह किससे युद्ध कर रहा है और उसका परिणाम क्या होने वाला है? परिणाम की चिंता किए बिना कुशल जीवन जीना एक कला है। लक्ष्य का होना कोई समस्या नहीं है किन्तु लक्ष्य के प्रति आसक्ति पैदा कर लेने से व्यक्ति लक्ष्य में उलझ जाता है और यहीं से उसके दुखों की शुरूआत होने लगती है।

"दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।

बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणा: फलहेतव:।। (2:49)[3]

कोविड-19 महामारी के बीच भगवद्गीता उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कुरुक्षेत्र के मैदान में थी, केवल प्रसंग बदला है। वहाँ रणभूमि धर्मक्षेत्र - कुरुक्षेत्र थी तो यहाँ रणभूमि चिकित्सालय है, वहाँ योद्धा अर्जुन और उसके सैनिक थे तो यहाँ योद्धा चिकित्सक एवं उसकी टीम है जो कि उस अज्ञात दुश्मन के विरुद्ध लड़ रहे हैं जिसके बारे में उन्हें बहुत कम जानकारी है एवं इस कोरोना रूपी रोग (दुश्मन) से लड़ने की दवाओं की भी पूर्ण जानकारी नहीं है। उस युद्ध में अर्जुन के साथ भगवान श्री कृष्ण सारथी के रूप में थे तो इस युद्ध में भी भगवान श्री कृष्ण अपने उपदेशों के रूप में कोरोना योद्धाओं के साथ हैं जो उन्हें अपने और अपने सगे-संबंधियों की जान की परवाह किए बिना, अपने व्यवसायिक उद्देश्य के लिए गहरी समझ विकसित कर बिना परिणाम मे उलझे हुए कोरोना के विरुद्ध एक प्रभावी रोकथाम रणनीति बना कर इलाज हेतु प्रेरित कर रहे हैं। भगवद्गीता में श्री कृष्ण ने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी जीवन जीने के तीन रास्ते दिखाए - कर्म योग, भक्ति योग एवं ज्ञान योग (योगास्त्र्यो मया प्रोक्ता नृणाम श्रेयोविधित्स्या, ज्ञान्म कर्म च भक्तिश्च नोपायोऽनयोऽस्ति कुत्रचित (11:20)। भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि वह पुरुष जो अपने प्राकृतिक गुणों के तत्वों को जानते हुए सभी कर्म करता है वह पुनः जन्म नहीं लेता है और मोक्ष प्राप्त करता है :

य एवं वेत्ति पुरूषं प्रकृतिं च गुणै: सह ।

सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ।। (13:23)[4]

कर्म योग : भारतीय संदर्भ में कर्म योग नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास का मॉडल है जिसमें दो मूलभूत धारणाएं जुड़ी हैं। कर्तव्य उन्मुखता (कर्तव्य के लिए कर्तव्य), पुरस्कार और लाभ के प्रति अनासक्ति। कर्म का सिद्धान्त कहता है कि व्यक्ति के कर्म उसे पुनर्जन्म मे बांधते हैं चाहे वह अच्छा कर्म करे या बुरा कर्म करे। अतः कर्मों का फल भुगतने के लिए उसे तब तक पुनर्जन्म लेना पड़ेगा जब तक कि उसके कर्मों का प्रभाव समाप्त नहीं हो जाता। इससे बचने का एक मात्र तरीका है कि वह अपने धर्म के अनुसार कार्य करे और अपने आप को परिणाम / लाभ- हानि से अलग करे क्योंकि परिणाम बंधन का कारण है। धर्म का अर्थ है अपने कर्तव्य का नैतिकता, सच्चाई एवं ईमानदारी सहित सामाजिक आचरण के साथ पालन करना। धर्म हमारे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पहलुओं को मजबूत करता है। धर्म का पालन करना बीमा के सिद्धान्त पर आधारित है जो कि उसे भौतिक दुनिया से आध्यात्मिक दुनिया की तरफ ले जाता है जैसा कि भगवान कहते हैं कि:

तस्मादसक्त: सततं कार्यं कर्म समाचर ।

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुष: ।।(3:19)[5]

कार्य तीन प्रकार के हो सकते हैं:

(1) निषिद्ध: ऐसे कार्य जो सामाजिक एवं धार्मिक रूप से निषिद्ध हैं जैसे कि जुआँ खेलना, चोरी करना, व्यभिचार आदि;
(2) मोह एवं इच्छाओं से प्रेरित: जैसे कि बच्चे पैदा करना, धन कमाना, प्रसिद्धि वाले कार्य करना आदि;
(3) आज्ञाकारिता: पेशेवर कर्तव्य के प्रति समर्पण, गरीबों की सेवा, देवी- देवता की भक्ति, तपस्या करना आदि।

निषिद्ध कार्य करने पर व्यक्ति दण्ड का भागी होता है किन्तु इच्छाओं से प्रेरित कार्य व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताएं / इच्छाएं पूरी करने में सहायक होता है किन्तु आज्ञाकारिता वाले कार्य व्यक्ति को कर्म योगी बनाते हैं। इन्हें करने वाले व्यक्ति परम आनन्द को प्राप्त करते हैं और वे अपना कार्य भगवान के उस विरक्त एजेंट के रूप में करते हैं जो असफलता पर चिंतित नहीं होते और सफलता उनके सिर पर चढ़ कर नहीं बोलती अर्थात समता मे रहते हैं। वें कर्तव्य को सर्वोच्च लक्ष्य बना कर श्री कृष्ण (भगवान) को समर्पित होकर निष्काम कर्म करते हैं और ईश्वर के आध्यात्मिक रूप का दर्शन अपने भीतर अनुभव करते हैं और प्रसन्न रहते हैं। ठीक उसी तरह जिस तरह अर्जुन ने रणभूमि में भगवान के चतुर्भुज दर्शन किए (11:51)। कोविड की इस लड़ाई में आशा और निराशा के बादलों ने स्वास्थ्य कर्मियों के मनों में गहरी अशान्ति पैदा की है लेकिन व्यक्ति चाहे वह स्वास्थ्यकर्मी हो या कोई अन्य, कर्म को नही छोड़ सकता। चिकित्सक का धर्म और कर्म, दोनों ही सेवा करना है। सेवा करने के कर्म को करते

समय होने वाले परिणाम, फायदें एवं नुकसान का त्याग कर कर्म करना ही, उसे सिद्ध पुरूष / सच्चा तपस्वी बना सकता है (18:11)। दृष्टिकोण में परिवर्तन ही उसके आध्यात्मिक जीवन के सफलता की कुंजी है। इस आशा-निराशा के बीच चिकित्सक के मन में केवल एक ही किरण है कि वह उसके चिकित्सक धर्म के अनुरूप कार्य कर रहा है उसने भले ही अपने मरीज़ को बचाने में सफलता हासिल न भी की हो तो भी उसके जीवन मे कुछ अंतर तो अवश्य लाया है जैसे कि महाभारत के युद्ध में भले ही लाखों की संख्या में सैनिक शहीद हो गए, अर्जुन के सबसे आदरणीय भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचर्य, गुरु कृपाचार्य तथा सगे भाई कर्ण का वध उसके खुद के हाथों हुआ एवं उसका पुत्र अभिमन्यु उसकी स्वयं की गलती के कारण वीर गति को प्राप्त हुआ किन्तु अंत में केवल एक संतोष था कि धर्म युद्ध में धर्म की विजय हुई और महाभारत के युद्ध के बाद एक ऐसे समाज का निर्माण हो सकेगा जहां नारी का सम्मान हो, लोगों में एक दूसरे के प्रति सद्भावना रहे और जीते जी वह राज्य भोग सकेगा तथा मृत्यु के बाद मोक्ष की प्राप्ति होगी। जैसा कि श्री कृष्ण कहते हैं कि समबुद्धि से युक्त ज्ञानीजन कर्मों से उत्पन्न होने वाले फल को त्यागकर जन्मरूप बंधन से मुक्त हो निर्विकार परम पद को प्राप्त हो जाते हैं:

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्तवा मनीषिण: ।

जन्मबन्धविनिर्मुक्ता: पदं गच्छन्त्यनामयम् ।।(2:51) [6]

भगवद्गीता हमें यह भी सिखाती है कि हमें अपने कर्म को परिणाम से अलग रखना चाहिए और एक निश्चित परिणाम की इच्छा का त्याग करना चाहिए। चिकित्सक को मरीज की नैदानिक स्थिति पर भले ही नियंत्रण न हो किन्तु वह समभाव से अपने नैदानिक कर्तव्यों को कर सकता है और लोगों की सेवा कर सकता है। उसे रोगी के सर्वोत्तम हित में अपने कार्य जारी रखने चाहिए। उसका कर्तव्य है कि वह अपने मरीज के जीवन के महत्वपूर्ण जैविक लक्षणों का अध्ययन करे और उसका इलाज़ करे न कि भय का वातावरण पैदा करे। कोरोना योद्धा के रूप चिकित्सक का कर्तव्य है कि रोगियों की मदद में कोई कसर न छोड़ें क्योंकि न तो जीवन उसके हाथ में है और न ही मृत्यु उसके नियंत्रण में। कई बार मरीज के तीमारदार अपने मरीज की मौत का दोष चिकित्सक के सिर पर मंढते हैं किन्तु उन्हें समझना चाहिए कि चिकित्सा कर्मी केवल एक धर्म योद्धा है- जीवन एवं मृत्यु उसके हाथ में नहीं है, जैसा कि 'गीता रहस्य' में तिलक कहते हैं कि आत्मा अजर एवं अमर है, इसे न तो हथियार से नष्ट किया जा सकता है, न ही आग से जलाया जा सकता है, न हवा इसे सुखा सकती है न ही पानी इसे गीला कर सकता है। आत्मा हर जगह मौजूद है यह न जन्म लेती है और न ही मरती है। इसीलिए चिकित्सा कर्मी एवं तीमारदारों को भगवान की गीता में उद्धरत निम्न बात समझनी चाहिए:

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदु:खदा:।
आगमापायिनोऽनित्यसतांस्तितिक्षस्व भारत॥ (2:14)[7]
अव्यक्तोऽयमचिंत्योऽमविकार्योऽयमुच्यते। तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि॥ (2:25)[8]

भक्ति योग: श्री कृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन, तू अपने व्यक्तिगत मोह से संबंध विच्छेद कर ले और कर्तव्य में रम जा क्योंकि भौतिक चीजों से जुड़ाव हमारी इंद्रियों को उत्प्रेरित करता है और अपनों से सांसारिक जुड़ाव, अपने लोगों के प्रति आसक्ति पैदा करता है तथा इच्छाओं को जागृत करता है। एक इच्छा की पूर्ति कई नई इच्छाओं को जन्म देती है और यह सिलसिला चलता ही रहता है। इच्छाओं की अनापूर्ति क्रोध पैदा करती है और काम, क्रोध, मोह नरक के तीन द्वार हैं (त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मन: । काम: क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेततत्रयं त्यजेत् ।। 16:21) किन्तु कर्तव्य में फल की चिन्ता किए बिना निष्काम भाव से रम जाना ही भक्ति है तथा कृष्ण तक पहुँचने का साधन है और जीवन के उद्धार का मार्ग है। (6:3) राधाकृष्णन ने (1962, पृष्ठ 562) ने अपनी टिप्पणी में लिखा है कि गीता के अनुसार ईश्वर में विश्वास करना, उससे प्रेम करना और उसके लिए समर्पित होना ही सच्ची भक्ति है और यही उसका इनाम है और कृष्ण से कोई प्रेम तब तक नहीं कर सकता जब तक कि वह अपने भीतर सभी प्राणियों से सार्वभौमिक प्रेम न पैदा कर ले। इस भाव को भगवान श्री कृष्ण ने कुछ इस प्रकार कहा है:

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वश: ।
य: पश्यति तथात्मननमकरतारं स पश्यति ।। (13:29)[9]

यह समय स्वास्थ्य कर्मियों का उनके चरित्र, उनकी आस्था, उनकी शक्ति और व्यवसायिक जुनून का लिटमस टेस्ट है। कोविड-19 नामक वायरस ने चिकित्सा कर्मियों के समक्ष उनके व्यवसायिक प्रतिज्ञा के प्रति सदी की सबसे बड़ी दुविधा खड़ी की है। वे अपनी एवं अपनों की सुरक्षा दाँव पर लगाएं और समाज एवं मानवता के प्रति अपनी पेशेवर प्रतिबद्धता जाहिर करें। वह भी बिना यह जाने / समझें कि उनके कदमों का मरीज पर क्या प्रभाव पड़ेगा? क्या वे उसका इलाज़ करने में सक्षम होंगें? और यदि नहीं तो उन्हें प्रशासन एवं मरीज के सगे संबंधियों का आक्रोश भी झेलना पड़ सकता है। ऐसे में उनके समक्ष एक ही उपाय है कि वे अपने सभी कार्यों को

भगवान के प्रति समर्पित करें। वैसे भी सच्ची भक्ति का आधार श्री कृष्ण के प्रति समर्पण ही है क्योंकि भक्तों का कल्याण भगवान की ज़िम्मेदारी है (9:22) और वही उनके रास्तों को सुगम बनाता है।

ज्ञान योग: ज्ञान योग का अर्थ मात्र बुद्धि लब्धि (इंटेलीजेंस कोशेंट) से नहीं है बल्कि बुद्धि द्वारा मन में आए विचारों के दार्शनिक भाव को समझना है जो कि विचारों की दिशा को नियंत्रित कर सके। अर्जुन भगवान को कहते हैं कि उनकी शिक्षा ने उन्हें दुविधा में डाल दिया है। एक तरफ तो वे कहते हैं कि कर्म योग महत्वपूर्ण है। फिर कहते हैं कि ज्ञान योग प्रधान है (3:1)। कृष्ण उसे समझाते हैं कि दोनों विरोधाभासी नहीं है। कोई भी व्यक्ति कर्म किए बिना तो रह ही नहीं सकता (3:5) बल्कि बुद्धि एवं कर्म का संयोग (उचित मनोदृष्टि + उचित कर्म) ही ज्ञान योग की आधारशिला है। कर्म करने के लिए ज्ञान आवश्यक है क्योंकि ज्ञान ही उचित कर्म करने के लिए प्रेरित करता है (18:19)। अतः ज्ञान योग एवं कर्म योग एक दूसरे के पूरक हैं। यही बात चिकित्सा कर्मियों पर भी लागू होती है। उन्हें कोविड से लड़ने के लिए कोविड की समझ पैदा करते हुए तन्मयता पूर्वक बिना फल की चिन्ता करते हुए कार्य करना होगा और इस तरह जब वह ज्ञान एवं कर्म के संयोग से निष्काम भाव से कार्य करेगा तो कर्म अकर्म में और फिर विकर्म में परिवर्तित हो जाएगा अर्थात वह ऐसी अवस्था को प्राप्त कर लेगा जिसमें कर्म को करने से ही प्रसन्नता होगी और कोविड का डर दिल से समाप्त हो जाएगा जैसा कि भगवान श्री कृष्ण कहते हैं:

"कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः। स बुद्धिमान्मनुष्येषु
स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत॥ (4:18)"[10]
यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पंडितं बुधाः ।। (4:19)[11] "

निष्कर्ष:

भगवद्गीता को किसी मंदिर या किसी विद्यालय में बैठ कर नहीं लिखा गया बल्कि यह कुरुक्षेत्र के मैदान में भगवान श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को जीवन जीने के मार्ग के रूप मे दिया गया संदेश है, जिसे बाद मे वेद व्यास द्वारा उच्चारित किया गया एवं भगवान गणेश द्वारा लिपिबद्ध किया गया अतः यह जीवन के हर संघर्ष में शिक्षा देती है। कोई भी शास्त्र / पुस्तक ऐसा व्यावहारिक ज्ञान नहीं दे सकती है, जैसा कि भगवद्गीता देती है। कोविड-19 ने हमारे समाज की बहुत सारी संरचनात्मक एवं ढांचागत कमजोरियों को उजागर किया है, जो कि हमारे समाज में अमीर-गरीब के रूप में विद्यमान थी। अधिकतर देशों में इस बीमारी ने साधन सम्पन्न वर्ग के कारण विदेशों से प्रवेश किया है किन्तु उसने उन गरीबों, मजदूरों एवं प्रवासी मजदूरों को सबसे अधिक प्रभावित किया है जो कि भीड़-भाड़ वाले इलाकों में रहते हैं और मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। इन सभी को कोविड-19 का खतरा अधिक है और अधिकतर सरकारी चिकित्सालयों मे मूलभूत चिकित्सीय सुविधाओं के अभाव ने डॉक्टर के लिए कुरुक्षेत्र की भूमि को और अधिक जटिल बना दिया है जिसमें सरकारों ने अधिकतर रोगियों को भगवान भरोसे छोड़ दिया है। ऐसे में मरीजों का भविष्य उन चिकित्सा कर्मियों के नैतिक दायित्व पर निर्भर है जो कि स्वयं भी अपर्याप्त सुरक्षा कवच (निम्न कोटि के पीपीई किट), अस्पष्ट सरकारी नीतियों के साथ युद्ध भूमि में जूझ रहे हैं। इनके साथ इनकी सेना में शामिल सफाई कर्मचारी, वार्ड ब्वाय, नर्सिंग कर्मचारी, क्लर्क, लैब तकनीशियन आदि, चिकित्सकों जैसा जोखिम लेकर ही पूरे जज़्बे के साथ कंधे से कंधा मिलकर लड़ रहे हैं जबकि इनमें से बहुत से लोगों का तो वेतन भी बहुत ही कम है। उन्हें यह भी नहीं पता कि यदि वे स्वयं बीमार हो गए तो उनकी और उनके परिवार की रक्षा कौन करेगा? किन्तु वे इस बीमारी से सबक सीख कर अपनी जान की परवाह किए बिना नए-नए तरीके ईजाद कर रहे हैं और इस बीमारी का इलाज़ कर रहे हैं। ऐसे में चिकित्सा कर्मियों को अध्यात्म में विश्वास के साथ-साथ, स्वयं भी अपनी शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखना होगा जैसा कि श्री कृष्ण भगवद्गीता में कहते है:

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्यकर्मसु।

युकत्स्वपनावबोधस्य योगो भवति दुःख्हा ॥(6:17)[12]

समाज के तौर पर पिछले कुछ दशकों में हमने संयुक्त परिवार से नाभिकीय परिवार की तरफ, परमार्थ से अपनार्थ की ओर, औरों के लिए क्या से मेरे लिए क्या की सोच को विकसित किया है किन्तु कोविड की महामारी ने हमें भौतिकवाद से आध्यात्मवाद की ओर मोड़ा है। भगवद्गीता अध्यात्म का निचोड़ है और सच्चे अर्थों मे जीवन का महत्व सिखाती है। इसे कोरोना योद्धाओं ने भी महसूस किया है क्योंकि व्यक्तिगत तौर पर अध्यात्म में विश्वास से उनका मानसिक तनाव कम होता है तो सामूहिक तौर पर साथियों एवं सहयोगियों से आपसी सौहार्द और सद्भाव बढ़ता है। कुल मिलाकर आपसी सहमति बनती है और पारस्परिक लाभ बढ़ता है। किन्तु अध्यात्म (भगवद्गीता) को समझने के लिए किसी भी व्यक्ति को चार योग्यताएं रखनी पड़ेंगी जो कि कोरोना योद्धाओं के लिए भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं:

- तप (अनुशासन)
- श्रद्धा (गहरा विश्वास)

- भक्ति
- जिज्ञासा (सीखने की इच्छा)

यदि वे उक्त योग्यताओं का पालन करते हैं तथा निष्काम भाव के साथ कर्म करते हैं तो सफल अवश्य होंगे जैसा कि भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि हे धनंजय (कोरोना योद्धा) जिसने कर्मयोग की विधि से समस्त कर्मों को परमात्मा को अर्पण कर दिया और जिसने विवेक द्वारा समस्त संशयों को नष्ट कर डाला हो, ऐसे अन्त: करण वाले व्यक्ति को कर्म नहीं बाँध सकता। इसलिए हे अर्जुन (कोरोना योद्धा) अपने हृदय में स्थित अपने संशय को विवेक रूपी तलवार से नष्ट कर कर्म युद्ध के लिए खड़ा हो जा (4:42 एवं 43), जिसे भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने इस तरह कहा है:

योगसन्न्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ।

आत्मवनतं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।। (4: 41)[13]

तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मन: ।

छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ।। (4:42)[14]

शोध संदर्भ :

(1) कालरा, ए., मिकोस, ए.डी. एवं कविथा, एम. (2020). कोविड़-19 एवं हैल्थ वर्कर. यूरोपीयन हर्ट जर्नल. 18 जुलाई, 2020 को https://academic.oup.com/eurheartj/advance-article/doi/10.1093/eurheartj/ehaa489/5851729 से प्राप्त

(2) गंगमेई, ई. (2020). स्मृति: हिंदू धर्म और भगवद्गीता का माध्यमिक शास्त्र. 28 जुलाई 2020 को https://www.academia.edu/3825745/SMRITI_The_Secondary_Scripture_of_Hinduism_and_Bhagavada_Gita से प्राप्त

(3) तबलान, एफ (2020). भगवद्गीता में कर्म का अध्यात्म. 18 जुलाई 2020 को https://www.academia.edu/39021633/SPIRITUALITY_OF_WORK_IN_BHAGAVADGITA से प्राप्त

(4) मुखर्जी, एस (2017). भगवद्गीता: आधुनिक प्रबंधन का प्रमुख स्रोत. एशियन जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, 8 (1), 68. DOI: 10.5958/2321-5763.2017.00010.5

(5) मुनियापन, बी. और सत्पथी, बी (2013). भगवद्गीता मे सीएसआर का 'धर्म' और 'कर्म'. जर्नल ऑफ ह्यूमन वैल्यू , 19 (2), 173-187. DOI: 10.1177/0971685813492265

(6) राधाकृष्णन, एस (1962). भगवद्गीता. *हार्पर कोल्लिन्स*

(7) सत्पथी, बी., मुनियापन, बी., और दास, एम (2013). भगवद्गीता के दर्शन और भारतीय संदर्भ में इसकी समकालीन प्रासंगिकता से UNESCAP के सुशासन की विशेषताएं. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन कल्चर एंड बिजनेस मैनेजमेंट, 7 (2), 192. DOI: 10.1504/ijicbm.2013.055504

(8) https://www.researchgate.net/publication/